उत्तराखंड
वर्ष 24 | अंक 55 | पृष्ठ : 12
मूल्य : पांच रुपये

6 राज्य • 2 केंद्रशासित प्रदेश • 21 संस्करण

अमर उजाला

देहरादून
सोमवार, 20 अप्रैल 2020
amarujala.com

कोरोना को हराने के लिए सबसे बड़ा हथियार

मास्क...हैंडवॉश और सार्वजनिक दूरी

मौसम की मार

पहाड़ में बेमौसम बारिश व ओलावृष्टि ने फेरा किसानों की मेहनत पर पानी

बारिश से गेहूं की फसल बर्बाद होने की कगार पर

अमर उजाला ब्यूरो

गढ़वाल। बेमौसम हो रही बारिश और ओलावृष्टि से किसानों की परेशानी बढ़ा दी है। पहाड़ में करीब 57 हजार 962 हेक्टेयर पर गेहूं की फसल होती है, जो 10-15 दिन में पक कर तैयार हो जाएगी। इसके अलावा जौ और सरसों भी पकने को तैयार है और सेब, नाशपाती, आड़ू, पुलम, खुमानी, आम के पेड़ों पर फल आ गए हैं। ऐसे में हुई तेज बारिश व ओलावृष्टि से जहां तैयार फसल बर्बाद होने की कगार पर है, वहीं फलों के पेड़ों से फल, बौर झड़ गए हैं। आलू, अदरक और झंगोरा की बुआई के लिए कृषि वैज्ञानिक बारिश को लाभ दायक बता रहे हैं।

58 हजार हेक्टेयर में फसलों पर खतरा

जौ, सेब, नाशपाती, आड़ू, पुलम, खुमानी और आम के पेड़ों को भी भारी नुकसान

10 फीसदी नुकसान

नई टिहरी। टिहरी जिले में करीब 22 हजार 550 हेक्टेयर भूमि पर गेहूं की पैदावार होती है। प्रति हेक्टेयर 13 क्विंटल गेहूं का उत्पादन होता है। जिले में कुल दो लाख 93 हजार 150 क्विंटल गेहूं पैदा होता है। जिला कृषि अधिकारी डा. जेपी तिवारी ने बताया कि बारिश और ओलावृष्टि से गेहूं और जौ की फसल को 7 से 10 प्रतिशत नुकसान होने का अनुमान है।

10 हजार हेक्टेयर में होता है गेहूं

रुद्रप्रयाग। जनपद में 10 हजार 412 हेक्टेयर में गेहूं, 15 सौ हेक्टेयर में जौ, 400 हेक्टेयर में सरसों व दो सौ हेक्टेयर में मटर होता है। जनपद में गेहूं, जौ की फसल तैयार है, जबकि सरसों की कटाई हो गई है। पिछले एक पखवाड़े में करीब 40 क्विंटल मटर का उत्पादन हो चुका है, लेकिन पिछले एक माह से बारिश व ओलावृष्टि से फसलों को काफी नुकसान हुआ है। मुख्य कृषि अधिकारी एसएस वर्मा ने बताया कि गेहूं की फसल तैयार हो चुकी है।

गेहूं की कटाई रुकी

कोटद्वार। मौसम की बेरुखी से क्षेत्र में गेहूं की फसल बर्बाद होने के कगार पर है। खराब मौसम की वजह से किसान गेहूं की कटाई नहीं कर पा रहे हैं। भाबर के काश्तकार कुबेर जलाल, जगत सिंह सौंद, बीरेंद्र केष्टवाल, विनोद भाष्कर नेगी व मुकेश कुमार ने बताया कि बारिश से फसल पहले ही खराब हो चुकी है। इन दिनों गेहूं की कटाई चल रही है। बारिश से गेहूं के साथ ही आम, लीची व नींबू आदि की फसल को भी नुकसान पहुंचा है।

खेतों में ओलों की चादर

उत्तरकाशी। जिले में करीब 12 हजार हेक्टेयर पर गेहूं होता है, जबकि काफी बड़े भाग पर मटर, आलू व दाल उगाई जाती है। तापमान में कमी के चलते अभी गेहूं की फसल पकी नहीं है, जबकि मटर तैयार है। चिन्यालीसौड़ और नौगांव प्रखंड में हुई ओलावृष्टि से गेहूं को काफी नुकसान पहुंचा है। कई गांवों में तो ओलों की चादर बिछने से गेहूं की फसल बर्बाद हो गई, जबकि आलू को भी काफी नुकसान हुआ है। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी डा. पंकज नौटियाल ने कहा कि बारिश, बर्फबारी और ओलावृष्टि गेहूं आदि फसलों व सेब के बाग को नुकसान हुआ है। ब्यूरो

बार-बार हो रही बारिश से भी फसलों के पकने के लिए तापमान नहीं बढ़ पा रहा है। ओलावृष्टि से भी नुकसान हुआ है।

-विजय जड़धारी, बीज बचाओ आंदोलन के प्रणेता

गोपेश्वर। चमोली जिले में 14 हजार हेक्टेयर भूभाग पर 13.50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर गेहूं का उत्पादन होता है। पोखरी के ओम प्रकाश और मातवर सिंह का कहना है कि मौसम ने छह माह की मेहनत पर पानी फेर दिया है। चमोली के युद्धवीर सिंह का कहना है कि अप्रैल तक गेहूं की फसल पक जाती थी, लेकिन इस बार मौसम बिगड़ने से फसल बर्बाद हो रही है। अपर जिला कृषि अधिकारी डा. जितेंद्र भाष्कर का कहना है कि मई तक भी यदि ऐसा ही मौसम रहा, तो तब दिक्कत आ सकती है। आम, सेब और लीची के बौर निकले इसलिए हवा से बौर गिर रहे हैं।

काश्तकार परेशान